डी.वेदश्री
असिस्टेंट प्रोफेसर -सेंट मेरिस सेंटिनरी
डिग्री कॉलेज, सिकन्दराबाद

हिंदी तथा भारतीय भाषाओं का सह अस्तित्व और उनका अंत :संबंध

"भारतीय भाषाएं मूल रूप में संस्कृत एवं देवनागरी लिपि के कारण एक ही ब्रृहद भाव भा +रत से जुड़ी हुई हैं ।" भा चेतना , प्रकाशधर्मी है' तो ' रत' अनुरत ,सतत क्रियाशील।" भारत अपनी संस्कृति- सभ्यता के कारण निरंतर उन्नत है। ज्ञानी जेल सिंह के अनुसार भारत यदि हिंदी को भूल गया तो अपनी संस्कृति को भी भूल जाएगा।पूरे विश्व में भारत एकमात्र ऐसा देश है, जहां अलग-अलग धर्म, जाति, पंथ, संस्कृति और परंपराओं के लोग मिलजुल कर शांति से रहते है। इसीलिए भारत को अनेकता में एकता का देश कहा जाता है। आज हम इन्हीं विविधताओं में से हमारी संस्कृति के बारे में जानने वाले है। भारतीय संस्कृति विश्व की सबसे प्राचीन संस्कृतियों में से एक है। सम्मान, मानवता, प्रेम, परोपकार, भाईचारा, भलाई, धर्म आदि हमारी संस्कृति की मुख्य विशेषताएं है। आज हर देश आधुनिकता की दौड़ अपनी संस्कृतियों को छोड़ रहा है, लेकिन हम भारतीयों ने आज भी अपनी संस्कृति, परंपरा और मूल्यों को नहीं छोड़ा है। इस वजह से हम एक ही देश में विविधता के साथ भी एक होकर शांति से रह पाए है।

भाषा मनुष्य को संस्कार देती है ।दुनिया का कोई भी व्यक्ति बिना भाषा संस्कार के जीवन के व्यापक परिवेश को आत्मसात नहीं कर सकता ।जिस देश की भाषा संस्कार व्यापक तथा सुदृढ़ होता है ,वही देश आर्थिक ,सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से सर्वांगीण विकास करता है ।हिंदी को सर्व सहमति से 14-09-1949 को संविधान सभा ने संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया है ।अनुच्छेद 343(1) के तहत हिंदी संघ की राजभाषा बनी और लिपि देवनागरी बनी।

आधुनिक हिंदी भाषा का स्वरूप भी राष्ट्रव्यापी होने लगा था। इस दौरान कन्याकुमारी से कश्मीर और अटक से कटक तक हिंदी संपूर्ण आंदोलन का नेतृत्व भी करने लगी थी ।उसी अभियान में सुभाषचन्द्र बोस ने राष्ट्रीय स्तर पर यह घोषणा की।," तुम मुझे खून दो मैं तुम्हें आजादी दूंगा।" उनका यह ऐतिहासिक वाक्य हिंदी में ही था। उनके इस कथन में कोई आकस्मिकता नहीं अपितु इसके पीछे हिंदी भाषा की अंतर्वाही शक्ति और अन्य भाषा-भाषियों में उसकी स्वीकार्यता रही है। सुभाष बाबू एक दूरदर्शी राष्ट्र नायक थे ।उनकी दृष्टि में आजादी के आंदोलन में हिंदी और हिंदी भाषी दोनों महत्वपूर्ण हैं। कानपुर के श्यामलाल पार्षद द्वारा हिंदी में लिखा झंडा गीत 'झंडा ऊंचा रहे हमारा विजयी विश्व तिरंगा प्यारा" हिंदुस्तान में क्रांति का गीत बन गया था। पंजाबी, मराठी, तमिल, तेलुगू ,कन्नड,मलयालम ,बांग्ला, उड़िया ,आसामी इत्यादि भाषा- भाषी आंदोलनकारियों का यह प्रिय गीत था ।कानपुर से चेन्नई तक आजादी के दीवानों को अलमस्त करने वाला यहां प्रिय गीत भाषाई सीमाओं को तोड़कर जन स्वर का रूप पकड़ चुका था। हिंदी की इसी स्वीकार्यता, लोकोन्मुखता और संपूर्ण देश को एकजुट करने की क्षमता ने इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा दिलवाया।लोकमान्य तिलक, गोखले, महात्मा गांधी, सरदार वल्लभभाई ,पंडित नेहरू ,राजगोपाल चारी जैसे व्यक्तियों ने हिंदी को महत्व प्रदान करते हुए राष्ट्रीय स्तर पर इसका प्रचार व प्रयोग किया।

स्वतंत्रता के पांच सौ वर्ष पूर्व से ही भक्ति साहित्य सांस्कृतिक एकता का सुदृढ़ आधार बना हुआ है ।भाषा की भिन्नता होते हुए भी तात्विक एकता यहां की मूल आधार है। मनुष्य मात्र में एक ही ज्योति का प्रकाश भारत भूमि की मौलिकता है। इसे झंकृत करने में महाराष्ट्र के नामदेव ,पूरब देश के कबीर- राय दास, गुजरात के नरसी मेहता व संत टुकड़ियों ,पंजाब व हरियाणा के गुरु गोविंद सिंह, बाबा लाल दास ,गुरु जंभेश्वर ,उड़ीसा- बंगाल के महाप्रभु चैतन्य, असम के शंकरदेव, माधवदेव, मध्यप्रदेश के गुरु घासी राम, बिहारी के दरिया साहब ,राजस्थान के दादू दयाल की दृष्टि एक जैसी दिखती है ।समाज चिंतकों और स्वाधीनता सेनानियों ने इसे अन्य भारतीय भाषाओं से जोड़ने का सार्थक प्रयास किया। कई भाषाई संस्थानों और साहित्यिक अधिष्ठानों का गठन हुआ ।पूरब- पश्चिम ,उत्तर -दक्षिण का साहित्यिक अंत: संबंध प्रांतीय भाषाओं में खोजा जाने लगा। सांस्कृतिक एकसूत्रता के माध्यम से भाषायी अंत: चेतना का विस्तार आजादी का एक महत्वपूर्ण आयाम है। 'हिंदी वर्धनी सभा साहित्य सम्मेलन प्रयाग नई जनपदों में 'नागरी प्रचारिणी सभा' की इकाइयों की स्थापना।

'हिंदी समिति वर्धा 'का गठन और 'दक्षिण भारत हिंदी प्रचार समिति 'के माध्यम से भाषाई चेतना को जागृत करने का प्रयास राष्ट्रीय स्तर पर किया गया। अनुदित साहित्य का कार्य तेजी से संपन्न होने लगा। संपूर्ण देश में संगोष्टियां और अधिवेशनों की बाढ़ सी आ गई।महात्मा गांधी आदि नेताओं ने कई बार हिंदी सभाओं की अध्यक्षता की। कांग्रेस पार्टी के अधिवेशनों के प्रस्ताव हिंदी भाषा में पारित होने लगे। इस प्रकार हिंदी की स्वीकार्यता बढ़ी और राष्ट्र भाषा के रुप में उसका महत्व बढ़ने लगा। हिंदीतर प्रदेश के लोगों ने हिंदी में सांस्कृतिक आदान- प्रदान का महत्वपूर्ण वातावरण निर्मित किया। उस दौरान तमिल ,तेलुगू ,कन्नड,मलयालम साहित्य का अनुवाद हिंदी में और हिंदी का दक्षिण भारतीय भाषाओं में तीव्रता से होने लगा। पर आजादी के बाद भारत भाषाओं की पारंपरिक दूरी बढ़ने लगी। आज यह राष्ट्रीय चिंता का विषय बन गयी है।राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से संविधान में त्रिभाषा का सिद्धांत समाहित किया गया ।प्रखर राष्ट्रीयता के लिए हिंदी और भारतीय भाषाओं में समन्वय करना अपरिहार्य लगता है। भाषा संस्कृति की संवाहिका होती है और सामाजिक गतिविधियों को सूत्रबद्ध भी करती है।अत: नाटक ,संगोष्ठी, साहित्यिक यात्रा,संवाद और अनुवाद के माध्यम से पुन: एकता विधायक बिखरे तत्वों को एकत्रित करना अपरिहार्य हो गया है।

भक्तिकालीन संतों ने यहां कडी राष्ट्रीय स्तर पर हजार वर्ष पूर्व ही संपन्न कर लिया था। उनके पूर्व गोरखनाथ ने लोकसंपर्क से लोकजागरण की अलख जगाई थी ।उनके भी पहले आदि शंकराचार्य ने केरल से चलकर उत्तरी भारत में सांस्कृतिक स्कूलों की स्थापना की।आजीवक, घिशाल, केश कम्बली, महावीर ,बुद्ध और अन्य भाषा -भाषी संतों ,धर्म-प्रवर्तकों ने इसी माध्यम से एकता के तंतु को मजबूत किया था। इस संदर्भ में राम-कथा का दृष्टांत प्रस्तुत किया जा सकता है। बंगाल का 'कृतिवास' तेलुगु का 'कंबरामायण', सिंधी और पंजाबी में रामचरित का गायन हमारी राष्ट्रीय सोच को एकान्वित करता है।

भारत में सांस्कृतिक सेतु का निर्माण करने के लिए तकनीकी ज्ञान , विज्ञान , संस्कृति ,सैन्य, युद्ध पद्धति , उच्च शिक्षा और मानविकी में अनेक आयामों का आदान-प्रदान हो रहा है पर हिंदी से भारतीय भाषाओं और भारतीय भाषाओं से हिन्दी में आदान-प्रदान की गति मंद है।हम अपनी ही नाभी में स्थित कस्तूरी की सुगंध से दूर होते जा रहे हैं। भाषा साहित्य के स्तर पर यह एक बड़ी विडंबना कही जाएगी । वैज्ञानिक मिसाइल मैन के नाम से विख्यात पूर्व राष्ट्रपति डॉ अब्दुल कलाम की मातृभाषा तमिल है प्रारंभिक दौर में जब भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय ने मंत्रालय में सुरक्षा सलाहकार थे, उन्होंने देश की तीनों सेनाओं (थल वायु और जल सेना) की बैठक में कार्यवाही तत्कालीन रक्षा मंत्री के निर्देशन में मिनट बुक हिंदी में लिखी ।उसी में सुरक्षा सलाहकार के रूप में डॉ.अब्दुल कलाम ने अंग्रेजी के स्थान पर हिंदी में हस्ताक्षर करके राष्ट्रभाषा के प्रति लगाव का श्रीगणेश कर दिया। केंद्रीय हिंदी संस्थान के सारस्वत सम्मान पुरस्कार समारोह के मुख्य अतिथि के रुप में भी राष्ट्रपति अब्दुल कलाम ने हिंदी में जो भाषण दिया चर्चा का विषय बना। इटली में जन्मी सोनिया गांधी हिंदी प्रेम सर्वप्रथम रोमन में पढ़ कर दिया था ।

गंगा तो गंगा होती है लेकिन उसको संगम और प्रयाग तीर्थराज बनाने वाली सच पूछिए तो जमुना होती है कहां से आती है और सहसा गंगा में मिलकर अपना सारा अस्तित्व खो देती है, स्वयं गंगा बन जाती है और गंगा को संगम और परिवेश को तीर्थराज बना देती है। भाषाई अंत: चेतना के संदर्भ में एक महत्वपूर्ण तथ्य रहा है कि यहां विविधता में एकता की अंत:

ध्वनि सुनी जा सकती है। भाषा और लिपि की बहुरुपता के बावजूद हिंदी के साथ सभी भाषाओं में भारतीय आत्मीयता की धड़कन को अनसुनी नहीं किया जा सकता ।भारतीय साहित्य के साथ भक्तिकालीन साहित्य में इसके दृष्टांत खोजे जा सकते हैं।तत्कालीन शासकीय प्रतिकूलता को भक्तों ने आध्यात्मपरक साहित्यिक प्रतिरोध द्वारा अनुकूलता में बदल दिया था। इसमें सभी भारतीय भाषाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। तमिल, मलयालम ,तेलुगू और कन्नड़ भाषा के शब्दों का हिंदी के भक्ति गीतों में गायन इसी तथ्य को संकेत करता है। भारतीयों के लिए हिंदी संस्कृति का मात्र संचार वाहक है हिंदी का प्रसार उसकी सार्थकता अनिवार्यता और भारत की भाषिक सांस्कृतिक एकता के दृष्टिकोण से महत्वपूर्ण है हिंदी भाषा बहुत सांस्कृतिक परिवेश में सक्रिय होने से अपेक्षाकृत ज्यादा रचनात्मक भूमिका निभाने की स्थिति में है जैसे हिंदी सिनेमा अपने संवादों एवं गीतों के कारण राष्ट्र स्तर पर लोकप्रिय हुई हैं।" पश्चिमी सभ्यता और संस्कृति से जब अपनी सभ्यता और संस्कृति का तुलनात्मक अध्ययन करते हैं, तो उन्हें अपनी सभ्यता और संस्कृति का पलड़ा भारी लगता है, अतः वे अपने बच्चों में, परिवार में अपनी ही संस्कृति व सभ्यता को पल्लवित पुष्पित करने के लिए सतत प्रयत्नशील रहते हैं।"भारतीय भारत के रीति-रिवाज , त्यौहार ,गणतंत्र दिवस ,स्वतंत्रता दिवस और जिस देश में रहते हैं वहां के राष्ट्रीय दिवस के अवसर पर भारतीय एकत्र होकर इन उत्सवों को उत्साह पूर्ण मनाते हैं ।विदेशों में भारतीय सभ्यता -संस्कृति, नृत्य कला, चित्रकला ,मूर्तिकला, संगीत कला ,वेशभूषा तथा भारतीय भाषाओं और विभिन्न संस्कृतियों के प्रति यहां के विद्यार्थियों की विशेष अभिरुचि होती है तथा हिंदी के माध्यम से भारतीय किसान, गांव ,अर्थशास्त्र आदि विषय जानने -समझने के लिए काफी उत्सुक रहते हैं। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी स्मृति न्यास के अध्यक्ष लक्ष्मी मल्ल सिंधवी जी से कहते हैं कि-"हिंदी राष्ट्र के कोटि-कोटि जन गण का कंठ स्वर है।उनकी पहचान है, सांस्कृतिक अस्मिता का मुखर स्वरूप है, अंतरराष्ट्रीय संबंधों का सेतु है।"डॉ . विवेकानंद शर्मा ने कहा है कि "महात्मा गांधी ने हिंदी भाषा और भारतीय संस्कृति को आजादी प्राप्ति के हथियार के रूप में उपयोग किया"।

संदर्भ सूची:

राष्ट्रभाषा एवं भारतीय भाषाएं डॉ .बलदेव वंशी पृ.सं-44

वागार्थ पत्रिका जनवरी 2003

राजभाषा पत्रिका, राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा, सितंबर -अक्तूबर 2007